Topic 86 **कर्म कारक 3**

अकर्मक धातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्तिक)॥

कुरून् स्वपिति। मासमास्ते। गोदोहमास्ते। (गोदोहमास्ते) क्रोशमास्ते॥

अकर्मक धातुओं के योग में देश, काल, भाव और गन्तव्य अध्वा (मार्गवाचक शब्द) कर्मसंज्ञक हों - ऐसा कहना चाहिए। 'कुरून्' (कुरून् स्वपिति। - इस वाक्य में 'कुरून्' यह द्वितीया कर्मसंज्ञा के कारण होती है। इसके योग में (कुरु स्वप् धातु अकर्मक है। यह कर्म संज्ञा होती है। (देशवाचक) शब्द का कर्म प्रयोग है। इसका तात्पर्य है - अटपटा सा प्रयोग कुरु देश को व्याप्त करके सोता है। कुरून् स्वपिति भूपालः (निश्चिन्त रहता है)॥ कुरून् स्वपिति भूपालः॥ अर्थात् भूपाल स्वाधिकारवशात् सुखम्॥ के अपने पूर्ण अधिकार (राजा) कुरुदेशपर्यंत (राजा) के सोता है। (निश्चिंत होकर में होने के कारण सोता है। (निश्चिंत) का अर्थ है मासभर रहता है। मासमास्ते। का अर्थ है मास रहता है। आस धातु अकर्मक है। अतः आस धातु के योग में कालवाचक मास शब्द की कर्मसंज्ञा हो गई। फिर कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।

" वृन्दावने मासमास्ते कृष्णजन्ममहोत्सव: ।"
'गोदोहमास्ते' का अर्थ है गोदोहन भर बैठता है। गोदोहः = गोदोहः – इसमें 'दोह' शब्द भाववाचक है। उसकी सकर्मक अस् धातु के योग में कर्मसंज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया हो जाती है।

' गोदोहमास्ते गोपाल: सावधान: प्रतिक्षणम ।। गोपाल गोदोह पर्यन्त गाय के पादप्रहार की आशंका से प्रतिक्षण सावधान रहता है। अन्य उदाहरण भी है। गोदोहमास्ते दुग्धार्थी सावधान: प्रतिक्षणम ।। दूध का क्रेता गोपाल दुग्ध में जल न मिला दे इस आशंका से गोदोह पर्यन्त प्रतिक्षण सावधान रहता है। 'क्रोशमास्ते' – कोसभर है। क्रोश शब्द मार्गवाचक है। उसकी अकर्मक 'आस्' धातु के योग में कर्मसंज्ञा होती है। कर्मसंज्ञा होने से क्रोश शब्द में द्वितीया विभक्ति हुई है। क्रोशमास्ते गुरावस्माद् विश्वविद्यालयो मम। क्रोशमास्ते नदी ग्रामात्। गव्यूतिमास्ते गोचारो नन्दग्राममनोहर: । क्रोश यह अध्वा (मार्ग) का माप है। इसी प्रकार गव्यूति (दो कोस) यह भी मार्ग का माप है। गोचार: = गायों का चारागाह। गव्यूतिमास्ते = दो कोस है। नंद ग्राम से मनोहर गोचार – दो कोस है।